21वीं सदी में तुलनात्मक शासन व राजनीति : दशा व दिशा

डॉ. प्रियंका कुमारी

1989 के उपरान्त पूर्ववर्ती सोवियत संघ के विघटन व साम्यवाद के विलोप के बाद तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता को ही सन्देह की दृष्टि से देखा जाने लगा। तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में नवोदित राज्यों की राजनीति को भी सम्मिलित कर लिया गया, किन्तु इससे सामान्य सिद्धान्त ढूँढ़ने में कोई मदद नहीं मिली।

तुलनात्मक शासन और राजनीति के अध्ययन में समय–समय पर अनेक उतार–चढ़ाव आए हैं। 1950 व 1960 के दशक में तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन का प्रचलन बढ़ा तथा ऐतिहासिक व संस्थागत अध्ययन प्रणाली के स्थान पर अनुभववादी व मूल्य विहीन अध्ययन को अधिक बल दिया जाने लगा। अब तुलनात्मक शासन व राजनीति का अध्ययन केवल कुछ विकसित पश्चिमी देशों के अध्ययन तक ही सीमित नहीं रहा।